वसंत वैली

सितम्बर २०१४ पत्रिका

कुछ बनने की मत सोचो कुछ करने की सोचो

भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपनी जीविका की शुरूआत एक शिक्षक के रूप में की थी। वे राजनीति में आने से पहले लगभग 40 वर्ष तक एक आदर्श अध्यापक के रूप में कार्य कर चुके थे। अपने जन्मदिन 5 सितम्बर को वे व्यक्तिगत उत्सव की तरह नहीं मनाते थे बल्कि उसे शिक्षकों का दिन मनाते थे। इसलिए भारत में हर साल उनके जन्मदिवस को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। 5 सितम्बर 2014 का दिन कुछ खास था। पण्डित जवाहरलाल नेहरू के 50 वर्ष बाद पहली बार भारत के किसी प्रधानमंत्री ने देश के सभी बच्चों को सम्बोधित किया। शिक्षक दिवस के अवसर पर दोपहर 3 से 4ः45 बजे तक प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिल्ली स्थित मानेशॉ हॉल में 700 बच्चों व शिक्षकों से रूबरू और देशभर से 2 करोड़ बच्चों व शिक्षकों से वीडियो द्वारा बातचीत की। यह हम सभी के लिए एक नई बात थी और इसके लिए हम सभी विद्यालय में 5 बजे तक रुके। हम सब काफी उत्सुक थे और यह जानना चाहते थे कि हमारे प्रधानमंत्री हम सबसे क्या कहना चाहते हैं तथा हमारे बारे में उनके क्या विचार हैं। मोदी जी ने अपने भाषण के प्रारम्भ में ही कहा कि यह उनका सौभाग्य था कि वे भारत की भविष्य को सम्बोधित कर रहें हैं। मुझे उनकी इस बात ने प्रभावित किया क्योंकि इससे यह ज्ञात हुआ कि हमारी सोच व प्रगति देश के प्रधानमंत्री के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। मोदी जी ने इस मौके पर अपनी जिन्दगी की कुछ घटनाओं के बारे में बताया। उन छात्रों को शिक्षकों का महत्व समझाया और भारत में साक्षरता कैसे हासिल कर सकते है ः इस पर प्रकाश डाला। प्रस्तुत है उनके विचारों के कुछ प्रमुख अंश–ः मोदी जी ने कहा कि आज कल बहुत बच्चे शिक्षक नहीं बनना चाहते और इसे एक सम्मानित कार्य भी नहीं माना जाता हैं। बच्चों की इस सोच को गलत बताते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षक या गुरू का स्थान हमारे जीवन में सर्वोपरि होना चाहिए और वे चाहते हैं कि भारत से अच्छे शिक्षकों का निर्यात हो क्योंकि संसार में अच्छे शिक्षकों की माँग है। उन्होंने यह कहा कि एक ज़माना था जब शिक्षकों को सबसे ज़्यादा सम्मान दिया जाता था। धीरे धीरे यह स्थिति बदलती गई परन्तु इसे पुनः स्थापित करना चाहिए। मोदी जी ने बताया कि कुछ बच्चों के लिए शिक्षक हीरे की तरह होते हैं। शिक्षकों की नैतिक ज़िम्मेदारी सबसे अत्याधिक बनती है। उन्होंने जापान का उदाहरण दिया और कहा कि वहाँ की तरह हमारे विद्यालयों में भी शिक्षकों और विद्यार्थियों को मिलकर विद्यालय की सफाई करनी। यदि विद्यालय स्वच्छ रहेंगे तो भारत भी स्वच्छ होगा। आजकल बच्चों में आगे बढ़ने का दम है और इसके लिए उन्हें आधुनिक विज्ञान व तकनीकों से जुड़ना चाहिए। इसका आग्रह भी उन्होंने किया। उन्होंने हिन्दुस्तान के पढ़े लिखे लोगों से विनती की कि वह लोग सप्ताह में एक दिन बच्चों के साथ बिताएँ और उन्हें अपने अनुभव बताएँ। उन्होंने बच्चों से पूछा कि वे कितना खेलते है। दिन में कम से कम चार बार पसीना बहना चाहिए। यह बचपन हैं और मस्ती का समय है। बच्चों ने भी वादा किया कि वह मौज मस्ती करेंगें। मस्ती और शरारत के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने अपनी बचपन की शरारत का वर्णन किया और बताया कि जब वे छोटे थे तो वे अपने दोस्तों के साथ कपड़े स्टेपल करते थे। उन्होंने कहा कि किताबें पढ़ना तो अच्छा है मगर हमें महान लोगों का जीवन चरित्र पढ़ना चाहिए। उनके जीवन में शिक्षा व शिक्षकों का और संस्कारों का उतना ही महत्व है जितना अनुभव का है। मोदी जी ने कहा कि सही शिक्षा मिलने के साथ–साथ अनुभव भी ज़रूरी है। मोदी जी ने कहा कि अत्याधिक महत्वकांक्षी होना भी हानिकारक होता है। आवश्यकता है कि हम महत्वकांक्षी होने के साथ सन्तुष्ट भी रहें। उन्होंने हम सबसे कहा कि 'कुछ बनने के सपने देखने की बजाय कुछ करने के सपने ज़रूर देखो और कर के दिखाओ' मोदी जी का मानना है कि सबको बहुत मेहनत करनी चाहिए। वे खुद भी बहुत काम करते है और दूसरे से भी यही उम्मीद रखते हैं। अगर उनके अधिकारी 12 घंटे काम करते हैं तो वह 13 घंटे काम करते हैं। नरेन्द्र मोदी जी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि हमें सबको बराबर मानना चाहिए। जैसे किसी माँ के लिए उनके बच्चे एक बराबर होते हैं वैसे ही शिक्षक के लिए सभी विद्यार्थी एक समान होते हैं। हमें पूरे ब्रहमाण्ड को अपना परिवार मानना चाहिए। मोदी जी को चिंता थी कि बच्चे बहुत जल्दी बडें हो रहे हैं और उनका बचपन बहुत जल्दी मर रहा हैं। उन्होंने कहा कि अपने पाँच साल के कार्यकाल में वह बालिकाओं की शिक्षा की ओर ज़्यादा ध्यान देंगे क्योंकि जब एक लड़की पढ़ती हैं तो दो परिवारों का लाभ होता हैं। इसे सुविधाजनक बनाने के लिए उन्होनें भारत के स्कूल लडकियों के लिए स्वच्छ हो ऐसी इच्छा जाहिर की। देशभक्ति पर उन्होनें कहा कि छोटे–छोटे कार्य करने से ही देशभक्ति प्रकट होती है बड़े– बड़े कार्य करने की आवश्यकता नहीं हैं। संसार और प्राकृति की चिंता करते हुए उन्होंने बताया कि हमारी आदतें ही बदली हैं जिसके कारण संसार गर्म हो रहा है। संसार नहीं बदला हैं। हम प्रकृति के साथ जीना भूल गए हैं और इसे । पुनः सीखना पड़ेगा। अंत में उन्होंने कहा कि विद्यार्थी व शिक्षक रिश्ता ज़रूरी होता हैं और हमेशा ज़िन्दा रहना चाहिए। हमेशा हँसते रहना चाहिए और शरारतें करते रहना चाहिए। मोदी जी का यह भाषण को विद्यालयों में अच्छी तरह स्वीकारा किया गया। बहुत से लोगों को लगा कि मोदी जी को शिक्षकों के महत्तव पर ज़्यादा ध्यान देना चाहिए था। अंत में जब पूछा गया कि अगर ऐसा ही कार्यक्रम अगले साल होगा तो कितने बच्चें आएँगे – इस संख्या को देखकर मैं हैरान हो गई और मुझे लगा कि मोदी जी ने अपना काम कर दिखाया।

"मुझे इस बात ने प्रभावित किया कि हमारी सोच व प्रगति देश के प्रधानमंत्री के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।"

संजरी कलंतरी

स्कूल वॉच

हिन्दी तात्कालिक प्रतियोगिता के परिणाम

कक्षा – 6

1. वेदिका बगला
2. सिद्धांत गाँधी, युवराज सिंह, रिया जैन
3. अरमान गाँधी, ऋषि राज मिश्रा

कक्षा – 7

1. शौर्या भारद्वाज
2. दारिणी चंद्रोक
3. अस्मिता

कक्षा – 8

1. आर्यन साध, साहिल अरमान कुमार, विनायक सतसगी
2. अदिति सिंह, जय अरोरा
3. सोहम कक्कर, आशुतोष त्रिवेदी

कक्षा – 9

1. अनन्या डालमिया
2. असीस कौर, अनन्या जैन
3. आन्या जैन, इशिता मल्होत्रा

हिन्दी प्रश्नोत्तरी के परिणाम

1. हरा सदन 2. पीला सदन 3. नीला सदन 4. लाल सदन

जीवन के बदलते रंग

जीवन पथ जटिल है ये, कालचक्र कठिन है ये,
पग पग पे भेद-भाव है, रक्त-रंजित पांव है।
जन्म से किसी के सर वंश की छाँव है,
झूठ के रथ पे सवार डाकुओं का गाँव है।
किसी के पास है छल-कपट, किसी को रूप का वरदान है,
ये सोच के मत बैठ जा कि ये विधि का विधान है।
बज रहा मृदंग है, ये कहता अंग- अंग है,
कि प्राण अभी शेष है, मान अभी शेष है।
उठा ले ज्ञान का धनुष,
एक कण भी और कुछ माँग मत भगवान से।
ज्ञान की कमान पे लगा दे तू विजय तिलक,
काल के कपाल पे लिख दे तू ये गुलाल से,
"कि रोक सकता है कोई तो रोक के दिखा मुझे,
हक छीनता आया है जो अब छीन के सबा मझे।"

ध्रुव रत्तन, 7 सी

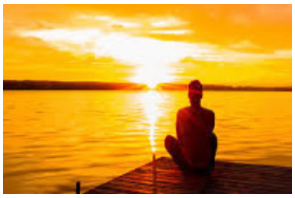

जल्दीबाज़ी

हाथ फैलाए पैर घुमाए
रजाई को फेंक के
हम बाहर निकल आए।
हम दौड़ेदौड़े नीचे भागे।
झटपट नाश्ता खत्म करते।
बस्ता बाँधके निकल पड़े।
पर सुबह थोड़ी अजीब लगी।
पर सोचा हटा सावन की घटा
क्या फर्क पड़ता है।
हम तो राजा ही है।
स्कूल पहुँचते ही मुँह खुला का खुला रह गया
सारी राजापन्ती वहीं निकल गइ।
सारी खिड़कियाँ बन्द
पूरा स्कूल था मन्द।
पर फिर एहसास हुआ कि स्कूल की गलती नही ती यार
मैं जल्दी था क्योंकि टाइम हो रहा था सुबह के चार!

आशुतोष त्रिवेदी

विपत्ति कसौटी जो कसे ते ही साचे मीत

इसका मतलब है कि : किसी ने सच ही कहा है कि मुसीबत मे जो साथ है वही सच्चा मित्र होता है।आजकल की दुनियाँ में हमे बहुत लोग मिलते है जो सामने कोमल और मधुर वचन बोलते हैं पीठ पीछे निन्दा करते हैं।मित्रता मे स्तर नही देखा जाता जैसे माधव-सुदामा। यह समझ मे आता है कि मित्रता बनाने से पहले विवक से काम लो और मित्रता हो जाने के बाद अन्त तक पूरी शक्ति से तन मन धन से मित्रा की सहायता करो। सच्चा मित्रा वही है जो माता-पिता की तरह हित चिन्तक हो बहन-भाई की तरह स्नेह करे। ऐसा मित्रा पाना है तो दुर्लभ पर जिसे मिल जाता है उसका जीवन सफ्ल और सार्थक हो जाता है।

महिमा सिंगी

पहली सूर्य ऊर्जा चलित विमान दुनिया का चक्कर लागाने के लिये तैयार

दुनिया का पहला पूर्ण रूप से सूर्य चलित हवाई विमान सोलर इम्पल्स 2015 मै पहली बार के लिये उडान भरते हुए दुनिया का चक्कर लगाएगा। इस अद्भुत विमान के पन्खो पर सोलर पैनल लगे हुए है जो शक्ति को रखते है जब तक विमान उडान नही लेता। यह विमान ऐन्द्रे बौशबर्ग और बरटान्द पिकार्ड ने डिजाईन करके बनाया है। इसका वजन तकरीबन 2 या 3 टन होगा पर इसमे सिर्फ आदमी विराजमान हो सकता है। यह 36 घन्टो के लिये उड सकता है और अभी से ही अमरीका के काफी शहरो मे उडान भर चुका है। वैज्ञानिक अभी भी सोलर इम्पल्स के यात्री क्शमता और पन्खो को बेहतर करने की कोशिश कर रहे है।उम्मीद है कि सोलर इम्पल्स जल्द ही सफलता की उडान भी भरे।

सोहम कक्कर

चुटकुले

समोसे का आलू

एक लड़का सिर्फ समोसे के आलू खा रहा था।
एक आदमी ने उसे पूछा - "तुम समोसे का सिर्फ आलू क्यों खा रहे हो?"
लड़का - "डॉकटर ने मुझे बाहर का खाना खाने के लिए मना किया है।"

पौधों में पानी

आदमी - "जाकर पौधों में पानी देकर आओ"
नौकर - "लेकिन अभी तो बारिश आ रही है।"
आदमी - "तो छाता लेकर पानी दे आओ"

चांद और उल्लू

लड़का - "आज दिन में चांद कैसे निकल आया"
लड़की - "जैसे दिन में उल्लू बोल रहा है।"

आशुतोष त्रिवेदी

25 वर्ष पर कुछ सवाल

पिछले 25 सालों मे वसंत वैली विद्यालय में क्या परिवर्तन आए है आपकी दृष्टिकोण में ?

छोटे लाल भईया व नारायण भईया : जब हम विद्यालय में पहली बार आए थे यह जगह जंगल समान थी। मैदान में बड़ा सा तालाब था और भैंसें यहाँ आकर घाँस चरने आती थी। तब से अबतक बहुत सारे बदलाव आए हैं। आज देखो कंप्यूटर की जगह तो लेपटोप भी आ गए हैं। बच्चों को आज विद्यालय के दवारा अपने खुद के शारीरिक व दिमागी विकास के लिए वसंत वैली कई सुनहरे अवसर देता है। यह परिवर्तन देखना दिलकश रहा है।

आपके हिसाब से विद्यालय में बच्चों के दवारा क्या बदलाव आ सकता है ?

छोटे लाल भईया व नारायण भईया : आज कल के विद्यालय के बच्चे देखा को भी अनदेखा कर देते है। अगर ज़मीन पर गमला गिरा दिखे तो उसे उठाने के बजाए वह दूसरी दिशा में देखने लगते है। इस नज़र अन्दाज़ को बदलना पड़ना पड़ेगा तभी विद्यालय का विकास होगा।

पिछले 25 साल में आपाने बच्चों में क्या परिवर्तन देखें हैं और इनपर आपका क्या दृष्टिकोण है?

श्रीमती राय : बच्चे ज़्यादा होशियार बातुनी और जागरूक हो गएँ हैं। मुझे यह बहुत अच्छा लगता है क्योंकि विज्ञान जैसे विषय में जिज्ञासा एक बहुत ज़रूरी हिस्सा है। परंतु ज़्यादा बातें करने से बच्चों का ध्यान कभी कभी भटक जाता है।

इस 25 साल को आपके हिसाब से कैसे मनाया जा सकता है? आपको स्कूल से और बच्चों से क्या उम्मीदें हैं ?

श्रीमती राय : इस 25 साल मेरे हिसाब से बढ़िया तरीके से मनाया जा रहा है। बहुत से कार्यक्रम और तैयारियाँ पहले से ही हो रहें हैं। मुझे स्कूल व बच्चों से यह उम्मीदें हैं कि बच्चें इन सब कार्यक्रमों में खुशी व ज़िम्मेदारी से भाग लें और स्कूल के स्वामित्व की देखभाल करें।

इशिता मल्होत्रा, देविका वीर

हिन्दी सप्ताह

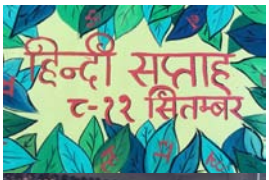

गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी हमारे विद्यालय में हिन्दी सप्ताह अत्यंत हर्ष व उल्लास के साथ मनाया जा रहा है। वसंत वैली विद्यालय के पच्चीसवें वर्ष के उपलक्ष में इस वर्ष हमने हिन्दी की भावाभिव्यक्ति, तात्कालिक व प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं के साथ-साथ संस्कृत विषय की भी कुछ विशेष गतिविधियों जैसे मुख पृष्ठ रचना व कहानी निर्माण में भाग लिया। छात्रों को अनेक प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकारों व आलोचकों से वार्तालाप का अवसर मिला। जिनमें डॉक्टर श्याम सिंह शशि जी, श्री अशोक बाजपेयी जी व श्रीमती सुरेखा पालेकर जी प्रमुख हैं। हमें हिन्दी व संस्कृत विषयों के बारे में ऐसी अनोखी जानकारी मिली जिसका हमें आभास भी न था। इस बार 'क्लास एक्ट' भी हिन्दी में किया गया।

सप्ताह भर के इस उत्सव का समापन हम प्रसिद्ध रचनाकार 'फणीश्वर नाथ रेणु' की कहानी पर आधारित नाटक 'पंचलाइट' से किया, जिसे 'कालिदास रंगशाला' के रंगकर्मियों द्वारा प्रस्तुत किया गया। सोने पर सुहागा 'हिन्दी शेकेस' भी पहली बार हिन्दी सप्ताह की गतिविधियों का हिस्सा बनने जा रहा है।

तारिनी सरदेसाई

सुनिए और गुणिए

हिंदी सप्ताह के समारोह को शुरू करने के लिए प्रसिद्ध लेखक और कवि डा श्याम सिंह शशि ने कक्षा दस और ग्यारह के बच्चों से वार्तालाप की। अपने मज़ेदार बातों और किस्सों के द्वारा डा शशि ने हमें हिन्दी भाषा मातृ भाषा बचपन प्रकृति संस्कृति और साहित्य का महत्तव बताया। अन्त में हमने डॉ शशि को कुछ प्रश्न पूछे।

1 आप दुनिया में अनेक यात्रांए के लिए गए हैं। उनमें से आपने सबसे महत्तवपूर्ण चीज़ क्या सीखा है

विश्वबंदुत्व। विश्व के सभी जन को एक परिवार बनाना। अच्छे मानव बनने के लिए विश्वशांति को फैलाना होगा और उसकी प्रेरणा विश्वबंदुत्व से ही आती है।

"हमने एक बार दर से पूछा
सारा जहां कहां है
दर का जवाब था
सारा जहां जहां है।
प्यार जहां जहां है।"

2 आपके जीवन में प्रेरणा क्या है

मेरे जीवन में गांव में चिड़िया खेत गोधुलि गंगा पहाड़ और नदी प्रेरणा रही हैं।

श्री अशोक बाजपेयी हिन्दी साहित्य के एक प्रसिद्ध कवि, निबन्धकार, समालोचक व कला के प्रशंसक है। वे भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्वा धिकारी रह चुके हैं परंतु बचपन से ही वे एक प्रख्यात कवि बनना चाहते थे। उन्होंने अनेक कहानियों व कविताओं की किताबें लिखी हैं। जिसके लिए उन्हें भारत सरकार द्वारा साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाज़ा गया। 10 सितम्बर को उन्होंने हमारे विद्यालय में कक्षा उनका मानना है कि हम सिर्फ घर व परिवार के साथ नहीं रहते बल्कि हम भाषा के साथ भी रहते हैं। भाषा हमारी दुनिया है और कि उसके बगैर मनुष्य व जानवर में क्या फर्क हैऋ अगर भाषा नही होती तो मनुष्य, मनुष्य नहीं होते। हिंदी भाषा में चालीस से अधिक बोलियाँ होती हैं। उनका मानना है कि भाषा एक हथियार है। दूसरों से वार्तालाप करने के लिए व समझने के लिए भाषा चाहिए मगर चुप रहकर सुनने से ही सीखना संभव है। छात्रों द्वारा पूछने पर कि आपको बचपन से कवि बनना था क्या आपकी अभी कोई इच्छाएँ या सपने हैं जो पूरे नहीं हुए हैं? तथा आपको कविता लिखने की प्रेरणा कहाँ से मिलती है? उन्होंने उत्तर दिया किजिंदगी की हर झलक मेरी लिखाई दर्शाती है। मुझे कविता लिखने की प्रेरेणा असल जीवन से ही मिलती है। मैं सपने तो बहुत देखता हूँ और सपने तो सभी लोग देखते हैं, सिर्फ बच्चे ही नहीं.....।

जोया हसन, आदित्या कपूर

किस्मत की बात- मेहनत बेकार

राजू अपने विद्यालय का सर्वश्रेष्ठ छात्र था। वह हर प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान प्राप्त करता था। उसके सभी सहपाठी उसके मित्र बनन चाहते थे । वह अपनी कक्षा का सबसे प्रसिद्ध बालक था। उसको जीवन की सभी सुख सुविधाये थीं। सभी छात्र उसके जैसा बनन चाहते थे। पर जब राजू घर जाता तो उसकी तस्वीर विद्यालय से कुछ अलग ही रंग ले लेती।घर पर राजू की मां हर दिन रहती कि कब राजू आए कुछ खाए और अपने आप काम पर लग जाए। परन्तु राजू घर आता अपने जूते उतारता बस्ता फेंकता और हाथ में एक "चिप्स" का कटोरा लेकर "टी.वी." के सामने बैठ जाता। उसकी मां उसका बस्ता खोलतीं उसकी किताबें निकालतीं और उसका गृहकार्य देखतीं। फिर वह राजू को काम करने को बोलने का प्रयास करतीं परन्तु हर बार असफल होतीं। अन्त मे वह राजू का गृहकाय स्वयं करके देतीं ताकि अगले दिन कक्षा में उसकी बेज्ज़ती ना हो।एक दिन विद्यालय में राजू के अध्यापक ने उसको बुलाया और बताया कि वह उसे कहानी लेखन प्रतियोगिता के लिये किसी और विद्यालय भेजा जा रहा है। कहानी लेखन का शीर्षक था मंजिल। जैसे ही राजू घर गया उसने अपनी मां को प्रतियोगिता के बारे मे बताया। उसकी बेचारी मां ने पूरी रात बैठ कर राजू के लिये कहानी लिखी। अगले दिन राजू अपनी मां की लिख हुई कहानी याद करके प्रतियोगिता के लिये गया। सभी छात्रों को पूरा विश्वास था कि प्रतियोगिता राजू ही जीतेगा। जब प्रतियोगिता के लिये गया तो उसे पता चला कि प्रतियोगिता का शीर्षक बदल दिया गया था। अब राजू फँस गया था। उसकी मां की सारी मेहनत बेकार। वाह कुछ भी उलटा पुलटा लिख आया । अब विद्यालय में सभी बच्चों को पता चल गया कि वह कोई भी कार्य खुद नही करता था। सभी दोस्त उससे नाराज हो गये। इसको कहते हैं किस्मत की बात मेहनत बेकार।

राबिया गुप्ता

अंधेरा

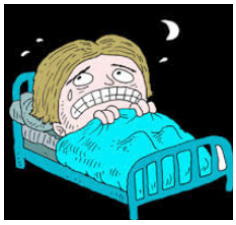

मेरे और अंधेरे का कुछ अजीब सा था।एक ऐसा डर जिसे तर्कहीन डर कह सकते हैं।मैं अंधेरे से बहुत डरती थी।ऐक बार मैं घर पर अकेली थी और बाहर आंधी थी।घर पर बिजली नहीं थी।मैं डर के मारे रोने लगी।मुझे बाहर से किसी की आवाज़ सुनाई दे रही थी। अचानक मेरी दीदी घर आई। उन्होंने मोमबत्तियां बुझाई मगर मेरे मन में डर घुस चुका था।इसी दौरान विद्यालय में गति प्रतियोगिता हुई।अंध विद्यालय के बच्चे भी आए थे।उन्होंने सुरीले गीत गाए और कुछ बच्चों ने तबला भी बजाया।उनसे मैं प्रेरित हुई और प्रतियोगिता के बाद मैं उनसे मिली।मैंने एक बच्चे से पूछा कि वह इतने सुर में कैसे गाते हैं।एक लड़के का जवाब यह था

थोड़ी धूप है सबका हिस्सा
थोड़ी छांऊ है सबका किस्सा।
यह गहरे सनाटे भगवान ने है सबको बाटा।
मेरे मन में अंधेरा है पर फिर भी मेरे दिल में है उजाला।

जिन बच्चों कि आखों में काला सन्नाटा वह हमेशा खिलखिलाते हैं।उस दिन से मेरे और अंधेरे का रिश्ता टूट गया।

आमिया कुमार

200 रुपए

एक भिखारी था। वह एक बहुत महंगे रेस्टोरेंट के बाहर भीख मांगता था ताकि वह अधिक पैसे कमा सके। एक दिन एक अमीर आदमी के कोट पर खाने का दाग लग गया तो वह कोट भिखारी को मिल गया।कोट पहनकरवह भिखारी रेस्टोरेंट के अंदर गया और बहुत सारा खाना मगवाया और खाया। वेटर को महंगे कोट के कारण शक भी नही हुआ।पर जब हजारों का बिल आया तो भिखारी ने कहा मेरे पास सिरफ 200 रुपए है.तबरेस्टोरेंट वालों ने भिखारी को पुलिस के हवाले कर दिया।भिखारी ने पुलिस वालों से कहा. "मेरे पास 200 रुपए है.ये आप रखो और मुझे जाने दो"।पुलिस वालों ने पैसे जेब मे रखे और भिखारी को जाने दिया।

अनहिति 8

हिन्दी संस्कृत उर्दू

संस्कृत वह मधुर भाषा है जिससे सभी भाषाएँ जन्मी हैं।भारत में, पाकिस्तान मे, अमरीका मे या यूरोप में जो भी भाषाएँ हैं सब की शुरूआत संस्कृत से ही हुई है। बहुत सारे शब्द इसलिए इन सब से मिलते है जैसे माँ, मातृ, मादे्र व mother इत्यादि। हिन्दी, भारत की राष्ट्र भाषा संस्कृत भाषा से ही जन्मी है। भारत में आज हिन्दी को मातृभाषा के नाम से सम्मानित किया जाता है।हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। मुगल शासन के समय हिन्दी व अरवी–फारसी को मिलाकर एक नई भाषा का निर्माण किया गया, जो उस समय जन साधारण की भाषा बनी और उसे नाम दिया गया –उर्दू।इसे अरवी व फारसी लिपि में लिखा जाता है और बोला जाता है हिन्दी की तरह।वक्त के साथ साथ हिन्दी और उर्दू दो अलग भाषाएँ वन गई और दोनों की अलग पहचान भी वन गई है मगर हिन्दी उर्दू जिनके बीच इतना कुछ समान है आज 'हिन्दुस्तानी' कहलाई जाती है।जो अपने आप में एक अलग भाषा के रूप से विकसित होती आ रही है।हिंदी संस्कृत और उर्दू एक ही भाषा श्रृंखला के खंड हैं जिनको मिला कर ही आज हम बोलते हैं।तीनों से शब्द मिलाकर ही एक बोली बनती है।और वह बोली हिन्दुस्तानी आज हम इस्तेमाल करते हैं। हालांकि उर्दू दाहिनी से बाहिनी दिशा में लिखी जाती हैं पर हिंदी व संस्कृत बाहिनी से दाहिनी दिशा में।फिर भी ये तीनों भाषाएँ हम हिन्दुस्तानियों में दृढता से जमीं हुई हैं।संस्कृत से जन्मी है हिन्दी और हिन्दी से उर्दू और इस तालमेल से हमारी संस्कृति इतनी व्यापक हो गइ– है। यह भी कहा जाता है कि आजकल संस्कृत का बहुत प्रभाव है क्योंकि कम्प्यूटरों की भाषा संस्कृत पर ही आधारित है और यह एक वैज्ञानिक भाषा है। ये तीनों भाषाएँ एक दूसरे की मदद लेते हुए और एक दूसरे से शब्द व वाक्यांश लेते हुए ही विकसित हुई हैं। इनका प्रयोग करने वाले लोग चाहे आज अलग हों मगर ये भाषाएँ उन्हें हमेशा याद दिलाती है कि उनकी शुरूआत हमेशा से एक थी।इसलिए हमें इसके महत्व समझते हुए संस्कृत हिन्दी व उर्दू को सम्मान देना चाहिए।

अनन्या जैन

वसंत वैली नाटक समारोह 2014
साक्षात्कार (इंटरव्यू)

प्रश्न ः आपके विचार से क्या नाटक उत्सव होने चाहिए? हॉ तो क्यों?

उत्तर ः इस फैस्टिवल से बहुत चीज़ें सीखते हैं व डर खत्म हो जाता है।

समक्ष ऐयर फोर्स स्कूल

उत्तरः हॉ होना चाहिए क्योंकि मुझे अपने स्कूल का नाम रोशन करना है

याशना कर *सेंट मैरीज़ स्कूल*

प्रश्न ः आपको नाटक का आइडिया कैसे मिला?

उत्तर ः हमने इन्टरनेट पर ढूँढा कि **25** अंक को किन - किन चीजों से जोड़ा जा सकता है और फिर जाकर हमने यह नाटक बनाया।

माधव बंसल *जी डी गोयंका पब्लिक स्कूल*

प्रश्न ः इस साल के उत्सव का विषय आपको कैसा लगा?

उत्तर ः बहुत अच्छा लगा क्योंकि हमने पहली बार **25** साल के बारे में इतनी जानकारी हासिल की।

याशना कर *सेंट मेरीज़*

प्रश्न ः नाटक बनाने में आपको किन – किन मुश्किलों का सामना करना पड़ा?

उत्तर1 ः संवाद बोलने में थोड़ी मुश्किल हो रही थी। हम अपनी कक्षाएँ भी मिस कर रहे थे।

गीजांतली *डी पी एस स्कूल*

उत्तर2 ः नाटक बनाने में हमें बहुत मुश्किल हुई जैसे कि पहले हमें कहानी नहीं मिल रही थी। कुछ बच्चे आ रहे थे कुछ नहीं आ रहे थे। जिस बच्चे का मेन रोल था वो आया ही नहीं।

माधव बंसल *जी डी गोयंका पब्लिक स्कूल*

प्रश्न ः आपको नाटक बनाने में कितना समय लगा?

उत्तर ः नाटक की तैयारी में **10** दिन लगे व रोज़ दो घंटों की तैयारी होती थी।

सूचित *निर्मल भारती स्कूल*

उत्तर2 ःसब ठीक था, मुझे तो बहुत अच्छा लगा।

समक्ष *टैगोर इंटरनेशनल स्कूल*

प्रश्न ः इस साल के उत्सव का विषय आपको कैसा लगा?

उत्तर ः बहुत अच्छा लगा क्योंकि हमने पहली बार **25** साल के बारे में इतनी जानकारी हासिल की।

याशना कर *सेंट मेरीज़ स्कूल*

प्रश्न ः आपके विचार में क्या नाटक उत्सव होने चाहिए? हॉ तो क्यों?

उत्तर1 ः हॉ, होने चाहिए क्योंकि बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं।

गीजांतली *डी पी एस*

उत्तर2 ः हॉ, होने चाहिए क्योंकि बच्चों का उत्साह बढ़ता है व उन्हें मज़ा भी आता है।

समक्ष *टैगोर इंटरनेशनल स्कूल*

हिन्दी हमारी मातृभाषा

हिन्दी से मैं डरती हूँ।
इतना लिखना पड़ता है।
जनवरी, फरवरी, मार्च और अप्रैल
सब कुछ रटना पड़ता है।
बस अ, आ, इ, ई आता है।
बाकी सब भूल जाता है।
पर यह तो मातृ - भाषा है।
इसलिए मैं स्कूल जाती हूँ।

अम्बिका सकलानी चार – अ

रोहन

एक दिन की बात है वसंत वैली स्कूल का एक लड़का रोहन अपनी कक्षा में बैठा था। रोहन को किकेट का खेल बहुत पसंद था। वह दिन - रात किकेट के बारे में ही सोचता रहता था। उस दिन वह कक्षा में बैठा, पढ़ने की बजाय खिड़की के बाहर, मैदान में चलते हुए खेल को देख रहा था। मन में वह भारत की टीम के लिए खेलने के सपने देख रहा था और उत्साहित हो कर चिल्लाने लगा। यह देख उसकी अध्यापिका वहॉ आई और रोहन पर नाराज़ हुई। उस दिन के बाद रोहन समझ गया पढ़ाई के समय पढ़ाई और खेल के समय खेलना चाहिए।

सुमैर गुप्ता तीन – अ

बारिश की मस्ती

रिमझिम रिमझिम बारिश आई,
काले काले बादल लाई।
कागज की नाव बनाते बच्चे,
पकौड़े लगते कितने अच्छे।
बागों और खेतों में हरियाली छाती,
किसान को बहुत खुशी दिलाती।
मोर नाचते मेढ़क गाते,
हम स्वादिष्ट - स्वादिष्ट भुट्टे खाते।
रिमझिम - रिमझिम बारिश आई,
काले काले बादल लाई।

महक आनंद चार – अ

मेरा भारत महान

सोने की चिड़िया कहलाता,
रामायण महाभारत की कथा सुनता।
मेरा देश है कृषि प्रधान,
ये है मेरा भारत महान।
200 वर्ष हुई हुकुमत,
साहस रखो कहते गॉधी जी।
गॉधीजी ने दिलाया सम्मान,
ये है मेरा भारत महान।
उत्तर में हिमालय खड़ा है,
दक्षिण में हिंद महासागर।
हमारे साथ आगरा का ताज,
ये है मेरा भारत महान।
पवित्र नदियों में करना स्नान,
हमारी संस्कृति व सभ्यता
का है अदभुत ज्ञान।
यही है मेरे भारत की पहचान,
ये है मेरा भारत महान।

अर्शिया गौड़ पॉच – अ

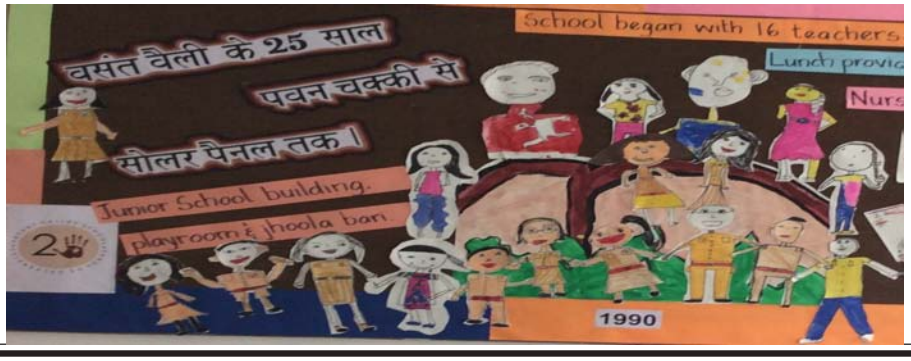

अपुन बोले तो...

वॉलिवुड ने हमेशा से ही हमारे जीवन को प्रभावित किया है। अभिनेताओं के पहनावें ने हर दशक के फैशन का चलन शुरू किया है। चाहे बैल बाटम का चलन हो या मैक्सी का हमने अपने अभिनेताओं और अभिनेत्रियों की वेश भूषा को हमेशा अपनाया है। राजेश खन्ना और साधना के बालों का फैशन 1970 और 1980 के बीच प्रचलित हुआ तो हर नवयुवक और नवयुवती इनकी नकल करता पाया जाता था। वॉलिवुड ने न केवल वेशभूषा बल्कि हमारी भाषा को भी प्रभावित किया है। आज के समय में भारतीय युवकों का झुकाव पाश्चात्य संस्कृति की ओर बढ़ता जा रहा है। मातृभाषा का प्रयोग करना अपनी शान के ख़िलाफ समझा जाता है और अंग्रेज़ी बोलना ही प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है। ऐसे समय में वॉलिवुड हिन्दी के तारक के समान सिद्ध हुआ है। वॉलिवुड की वजह से देशों में ही नहीं विदेशों में भी हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार बढ़ा है और लोग वॉलिवुड फिल्मों का आनन्द उठाने के लिए हिन्दी सीखने का प्रयास कर रहे हैं।

बॉलिवुड ने न केवल वेश भूषा बल्कि हमारी भाषा को भी प्रभावित किया है

जहाँ एक तरफ विद्यालय में अध्यापक और घर में माता-पिता बच्चों को अंग्रेज़ी में वार्तालाप करने का आग्रह करते हैं और उनमें हिन्दी के प्रति हीन भावना भरते हैं वहीं वॉलिवुड सभी को अपनी तरफ खींचता हुआ हिन्दी का प्रचार करता रहा है। हर व्यक्ति किसी भी धर्म का हो किसी भी उम्र का हो और किसी भी जाति का हो वॉलिवुड की फिल्में देखना पसंद करता है और अपने पसंदीदा अभिनेता और अभिनेत्री के बोल चाल की नकल करने का प्रयास करता है। वॉलिवुड का लाख लाख शुक्र है कि उसकी वजह से हिन्दी भाषा कब्र में जाने से बची हुई है। पर

जिस तरह हर सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी तरह वॉलिवुड ने हमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से प्रभावित किया है। जहाँ एक तरफ हिन्दी भाषा को लुप्त होने से बचाया है उसकी दूसरी तरफ उसका चीरहरण करके उसकी मर्यादा और अस्तित्व का नाश कर रहा है। **मैं** से **अपुन** मित्र से **भीडू** यही है हमारी आज की बोलचाल ***बिल्कुल वॉलिवुड स्टाइल*** ।

काम्या यादव

पहेली

1 : दो लड़के दोनो एक रंग के। एक बिछड़ जाए तो दुसरा काम न आए?

2 : भिखारी नही पर भीख माँगता हैं। मडकी नही पर पर्स इस्तेमाल करता है। पुजारी नही पर घटी बजा हैं। यह कौन हैं?

3 : पढ़ने मे लिखने मे दोनो मे मैं आता काम पैन नही कागज़ नही बताओ क्या है मेरा नाम?

4 : ऐसी कौन सी चीहज़ है जिसे आगे से बनाया है भगवान ने और पीछे से इन्सान ने। ?

5 : ऐसी कौन सी चीज़ है जिस पर न तो खाल है न ही पंख है न ही कोई आकार है और न ही हडडी है। फिर भी उसके पास उगलियाँ और अंगुठा हैं।

उत्तर : 1 जूता 2 बस कन्डकट 3 चश्मा 4 बैलगाड़ी 5 दस्तानें

शुभप्रीतकौर जिन्दादिल डान्सर

5 सितम्बर को शुभप्रीत कौर घुम्मड जी हमारे स्कूल के कक्षा 10वी व 11वी के छात्राओ से बात चीत करने आइ थी । शुभ जी भारत के मशहूर 'इन्डियाज गौट टैलन्ट' शो मे पहली रनर अप थी। और उनकी प्रतिभा बिल्कुल अद्वितीय एक टाँग पर नाचना। शुभ कौर जी ने अपनी बाए टान्ग डॉक्टर की लापरवाही के कारण खो दी और उन्हे वे टाँग कटवानी पड़ी। उस समय वे सिर्फ 23 साल की थी जब उनकी स्कूटर दुर्घटना हुइ जहा उनका बाया पैर टूट गया। दुर्घटना के बावजूद कौर जी ने हिम्मत नही हारी और आज वे दुनिया भर मे सनसनी है। शुभप्रीत जी अपने गाव मे पहली बेटी थी जिनका जनमदिन मनाया गया। दुर्घ टना के बाद से वे हर रोज जिम भी जाती है अपने एकलौते पैर मे ताकत लाने के लिए और साथ ही साथ अपना डान्स भी जारी रखती है। शुभप्रीत जी गाना गाने की भी शौकीन है और डान्स मे आइटम नम्बरही उनके मनपसन्द गाने है। शुभप्रीत अभी 'एशियाज गौट टैलन्ट' प्रतियोगिता की तैयारियो मे व्यस्त है जो कि सितम्बर के अन्त मे सिगापोर मे होगा। शुभप्रति जैसी जिन्दादिली महिला इस दुनिया मे बहुत कम है। शुभप्रीत जी की जिन्दगी हम सब के लिए महान प्रेरणा बन चुकी है और हमारे दिलो मे बस चुकी है।

अक्षय शरण

शब्द हैं ये कुछ ऐसे, जिनका अंग्रेजी में नहीं अर्थ। गूगल पर भी ढूँढने से, समय करोगे व्यर्थ।

नीचे लिखी सूची उन शब्दों की है जो सिर्फ हिंदी में इस्तेमाल होते है व उनका अंग्रेजी में अर्थ स्पष्ट नही हैं अथवा उन्हें अंगेंज़ी में भी इसी रूप में स्वीकार किया गया है।:

1) मतलबी
2) चंपी
3) गगनचुम्बी
4) लस्सी
5) बेला
6) चलेगा
7) विराग
8) झूठा (खाना)
9) पजामा
10) चाय-पानी
11) घी
12) साड़ी

असीस कौर

संपादक समिति

इशिता मल्होत्रा, देविका वीर, जोया हसन, अदित्या कपूर, आसीस कौर, जाहन्वी नागपाल, काम्या शर्मा, काम्या यादव, रीया कोठारी, सरीना मित्तल, अरमान पुरी, नूर डीगरा, सरीना नंदा, ऋषब चैटर्जी, आकंक्षा जाधव, अन्नया जैन, इन्द्रनील रॉय, रिद्धमा वाही

मुख्य संपादक : तारिनी सरदेसाई